नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

डिजिटल दुनिया का अंधेरा और टूटता बचपन

गाजियाबाद के लोनी इलाके में भारत सिटी सोसायटी से सामने आई तीन सगी बहनों की सामूहिक आत्महत्या की घटना केवल एक आपराधिक या पारिवारिक त्रासदी नहीं है, बल्कि यह हमारे समय के सबसे खतरनाक सामाजिक संकट की चेतावनी है. हाल ही में घटी यह घटना देश के हर माता-पिता, शिक्षक और नीति-निर्माता को झकझोरने वाली है. यह सवाल अब टाला नहीं जा सकता कि क्या हम अपने बच्चों को स्मार्टफोन के हाथों खोते जा रहे हैं. टनिशिका, प्राची और पाखी. तीन नाम, तीन मासूम चेहरे और एक जैसी नियति. पुलिस की प्रारंभिक जांच में सामने आया तथाकथित 'कोरियाई लव गेम' केवल एक गेम नहीं था, बल्कि एक मानसिक जाल था, जिसने किशोर मन को वास्तविक दुनिया से काट दिया.

टास्क-बेस्ड ऑनलाइन गेमिंग, काल्पनिक पहचान, और आभासी भावनात्मक लगाव. ये सब मिलकर बच्चों को एक ऐसी दुनिया में ले जाते हैं, जहां असफलता का अर्थ जीवन का अंत बताया जाता है. सबसे चिंताजनक तथ्य यह है कि ये तीनों बहनें कोविड काल से स्कूल से दूर थीं. यानी शिक्षा, मित्रता, खेलकूद और सामाजिक संवाद से कटाव. इसकी जगह स्क्रीन ने ले ली. स्मार्टफोन उनके लिए खिलौना नहीं, बल्कि दुनिया बन गया. जब माता-पिता ने फोन छीना, तो वह केवल एक डिवाइस नहीं गया, बल्कि उनकी 'आभासी पहचान' टूट गई. यही टूटन आत्महत्या जैसे भयावह कदम में बदल गई. यह घटना हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि क्या केवल बच्चों को दोष देना पर्याप्त है. उत्तर साफ है. नहीं. असल जिम्मेदारी समाज और पालकों की है.

आज स्मार्टफोन कई घरों में 'डिजिटल आया' बन चुका है. बच्चा चुप रहे, इसके लिए फोन पकड़ा दिया जाता है. लेकिन वही फोन कब जहर बन जाएगा, इसका अंदाजा तब लगता है जब बहुत देर हो चुकी होती है. ऑनलाइन गेमिंग की लत एक गंभीर मानसिक स्वास्थ्य समस्या है. यह धीरे-धीरे नींद, पढ़ाई, व्यवहार और भावनात्मक संतुलन को नष्ट करती है. बच्चे आभासी दुनिया को असली समझने लगते हैं. वहां मिलने वाली तारीफ, रैंकिंग और टास्क उनके आत्मसम्मान का आधार बन जाते हैं. वास्तविक दुनिया की डांट, अनुशासन या सीमाएं उन्हें असहनीय लगने लगती हैं.

यहां सरकार और टेक कंपनियों की भूमिका भी सवालों के घेरे में है. भारत में अभी भी ऑनलाइन गेमिंग और बच्चों के डिजिटल कंटेंट पर सख्त निगरानी का अभाव है. माता-पिता को यह तक नहीं पता होता कि बच्चा कौन सा गेम खेल रहा है, किससे बात कर रहा है और किन मानसिक निर्देशों के प्रभाव में है. अब समय आ गया है कि पालक 'डिजिटल साक्षरता' को उतनी ही गंभीरता से लें जितनी शिक्षा को. बच्चों से संवाद, उनके दोस्तों और ऑनलाइन गतिविधियों की जानकारी, समय सीमा और भावनात्मक सहारा. यह सब अनिवार्य होना चाहिए. डांट और प्रतिबंध के साथ-साथ विश्वास और बातचीत भी जरूरी है.

लोनी की यह घटना एक चेतावनी है. अगर अब भी हम नहीं चेते, तो स्क्रीन के इस अंधेरे में न जाने कितने बचपन बुझते चले जाएंगे. स्मार्टफोन स्मार्ट तभी है, जब उसका इस्तेमाल समझदारी से हो. वरना वह रिश्तों, संवेदनाओं और जीवन तीनों को निगल सकता है.

बजट में विकसित भारत की दिशा परिलक्षित

प्रो. विवेकानंद तिवारी
अध्यक्ष, आम्बेडकर पीठ एचपीयू, शिमला

नए भारत की आवश्यकताओं और भविष्य की संभावनाओं को ध्यान में रखकर प्रस्तुत किया गया यह बजट समावेशी विकास की स्पष्ट झलक देता है. इंफ्रास्ट्रक्चर, टेक्नोलॉजी, हरित ऊर्जा, शिक्षा और स्वास्थ्य पर फोकस के साथ यह बजट विकास को जमीनी स्तर तक पहुंचाने का भरोसा देता है. आर्थिक सुधारों और नीतिगत स्पष्टता के माध्यम से यह बजट भारत को वैश्विक मंच पर और अधिक प्रतिस्पर्धी बनाने की दिशा में प्रभावी भूमिका निभाएगा. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के मार्गदर्शन में यह बजट विकसित भारत के लक्ष्य को साकार करने का सशक्त आधार है. नए हाईस्पीड रेल कॉरिडोर, बायोफार्मा, पर्यटन,रेयर अर्थ मिनरल्स और सेमी कंडक्टर निर्माण जैसे क्षेत्र शामिल हैं. विशेषज्ञ इसे भविष्य को ध्यान में रखकर उठाए गए कदम बता रहे हैं.

> वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिए प्रस्तुत किए गए बजट की कुछ मुख्य विशेषताओं में वित्तीय अनुशासन का अनुपालन किया जाना भी शामिल है. बजटीय घाटे को 4.5 प्रतिशत के अंदर रखने का प्रयास सफल रहा है. वित्तीय वर्ष 2025-26 में बजटीय घाटे को सकल घरेलू उत्पाद का 4.4 प्रतिशत रखने में सफलता हासिल हुई है. जबकि, अमेरिका जैसे विकसित देश में भी आज बजटीय घाटा सकल घरेलू उत्पाद के 6 प्रतिशत से अधिक है. वित्तीय वर्ष 2026-27 में बजटीय घाटे को कम करते हुए इसे 4.3 प्रतिशत तक नीचे लाने का प्रयास किया जा रहा है, हालांकि वित्तीय वर्ष 2026-27 के दौरान पूंजीगत खर्चों में 1.1 लाख करोड़ रुपए की वृद्धि भी प्रस्तावित है.

भारत के भविष्य को ध्यान में रखकर बनाया गया है इस वर्ष का बजट दिनांक 1 फरवरी 2026 को, रविवार के दिन, भारत की वित्तमंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमन ने भारतीय संसद में वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिए बजट पेश किया. इस बजट में की गई घोषणाओं के माध्यम से वैश्विक स्तर पर घटित हो रही उथल पुथल से भारत को बचाने की पुरजोर कोशिश की गई दिखती है. अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रम्प द्वारा अपने द्वितीय कार्यकाल में वर्ष 2025 के दौरान पूरे वर्षभर लगातार कई देशों के अमेरिका को होने वाले निर्यात पर टैरिफ की घोषणाएं की जाती रहीं एवं इसके विरोध स्वरूप कुछ देशों ने अमरीका से इन देशों को होने वाले निर्यात पर प्रतिकारी टैरिफ लगाने की घोषणाएं की जाती रहीं. चीन ने तो प्रतिशोध में अमेरिका को दुर्लभ खनिज पदार्थों की आपूर्ति ही रोक दी थी. हालांकि इसके पूर्व अमेरिका ने भी चीन को सेमीकंडक्टर एवं चिप्स की आपूर्ति को प्रभावित करने का प्रयास किया था. कुल मिलाकर, कुछ देश तो आपस में विभिन्न वस्तुओं के आयात एवं निर्यात को रोकने के प्रयत्न करते रहे. इन सभी घोषणाओं से वैश्विक स्तर पर विशेष रूप से आर्थिक क्षेत्र में माहौल विपरीत रूप से प्रभावित होता रहा. ट्रम्प प्रशासन ने भारत से अमेरिका को होने वाले विभिन्न वस्तुओं के निर्यात पर भी 50 प्रतिशत टैरिफ लगा दिया है, जो अमेरिका द्वारा विभिन्न देशों से अमेरिका को होने वाले निर्यात पर लगाए गए टैरिफ में संभवत: आज अन्य देशों की तुलना में सबसे अधिक है.

इस वित्तीय वर्ष के बजट में तीन कर्तव्यों को ध्यान में रखा गया है. (1) विभिन्न क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता प्राप्त करते हुए भारत की आर्थिक विकास दर को और अधिक तेज किया जाय ताकि भारत को वैश्विक स्तर पर चल रही उथल पुथल से बचाया जा सके; (2) भारतीय युवाओं में कौशल का विकास करना ताकि तकनीकी क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर हो रहे परिवर्तनों के लिए वे अपने आप को तैयार कर सकें; (3) देश में समावेशी विकास हो सके एवं भारत के संसाधनों का उपयोग समस्त नागरिकों की भलाई में किया जा सके और कोई भी नागरिक, नगर एवं राज्य आर्थिक विकास की धारा से बाहर नहीं रहे.

वैश्विक स्तर पर उक्त वर्णित परिस्थितियों के बीच भी भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के बीच सबसे तेज गति से आगे बढ़ती अर्थव्यवस्था बनी रही. परंतु, भारत की विकास दर की इस गति को आगामी वर्षों में भी बनाए रखने के उद्देश्य से वित्तीय वर्ष 2026-27 के बजट में कई महत्वपूर्ण घोषणाएं की गई है. भारत आज दुर्लभ खनिज पदार्थों तथा सेमीकंडक्टर एवं चिप्स का भारी मात्रा आयात करता है. चिप्स को तो आज के उत्पादों के निर्माण में तेल की भूमिका के रूप में देखा जा रहा है. इन दोनों पदार्थों पर चीन एवं अमेरिका का लगभग पूर्णत: एकाधिकार है. भारत अपने आप को इन क्षेत्रों में आत्मनिर्भर बनाना चाहता है, इस दृष्टि से बजट में भारत में ही दुर्लभ खनिज पदार्थों के उत्पादन को बढ़ाने के लिए ओड़िसा, केरल, तमिलनाडु एवं आन्ध्रप्रदेश स्थित खदानों में से कच्चे माल को निकालकर इसे संसाधित करते हुए भारत में ही दुर्लभ खनिज पदार्थों के निर्माण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बजट में उक्त चारों राज्यों में एक कोरिडोर बनाने की घोषणा की गई है. इसी प्रकार, भारत में ही सेमीकंडक्टर एवं चिप्स के निर्माण हेतु विनिर्माण इकाईयों की स्थापना को प्रोत्साहन देने के लिए बजट में कई उपायों की घोषणा की गई है एवं इस हेतु 40,000 करोड़ रुपए की राशि का प्रावधान भी किया गया है.

महाकौशल की डायरी

दम तोड़ गई पूर्व मंत्री व कद्दावर भाजपा विधायक की मांग...

अविनाश दीक्षित

जब खुद की ही सरकार में पार्टी के कद्दावर नेता, पूर्व मंत्री व विधायक की बातों को तवज्जो नहीं दी गई तो फिर आम आदमी की बिसात ही क्या.. यह बात एक बार फिर इसलिए चर्चाओं के केंद्र में है, क्योंकि अनुशासन के लिए जाने वाली भाजपा में उसके ही वरिष्ठ विधायक की मांग को हाशिये पर रखा गया.

हुआ यूं कि कुछ दिन पहले ही जबलपुर के बरगी बांध परिक्षेत्र से रीवा तक जाने वाली दांई तट नहर सगड़ा झपनी गांव के पास फूटी और इसके बाद आसपास के 6 गांवों की फसलें जलमग्र हुईं जिससे 20 किसान प्रभावित हुए. नहर फूटने की वजह जो सामने आई उसने जिम्मेदारों के रवैये की ऐसी पोल खोली कि कलेक्टर को भी कार्रवाई करने अब सोचना पड़ रहा है. नहर फूटने की खबर मिलते ही पूर्व मंत्री व विधायक अजय विश्नोई ने सोशल मीडिया में जो दर्द लिखा उससे साफ था कि बरगी बांध की दांई तट की नहर के मरम्मत कार्य और जिले की अन्य नहरों के मरम्मत कार्य की वह कई बार शिकायत कर चुके थे लेकिन समय रहते जिम्मेदारों ने कोई एक्शन नहीं लिया और बाद में नहर फूटी जिससे किसानों की फसलें बर्बाद हुईं.

मामले में स्थानीय किसानों ने स्पष्ट कहा कि सगड़ा झपनी गांव के पास दांई तट नहर में पिछले 2 साल से पानी धीरे धीरे करके रिस रहा था जिसकी मरम्मत कराने की कई बार बात कही गई लेकिन किसी ने ध्यान नहीं दिया. हालिया हुए इस घटनाक्रम के बाद किसान ये भी कहते नजर आए कि जिम्मेदार खुद चाह रहे थे कि नहर फूटे और किसानों का नुकसान हो. उधर श्रृद्धा बंसोडकर कार्यपालन यंत्री, दांई तट नहर द्वारा पत्रकारों को दिए गए बयान ने भी काफी सुर्खियां बटोरीं. बयान में श्रृद्धा बंसोडकर ने खुद माना कि नहर में पानी का सीपेज कई सालों से था जिसका मरम्मत कार्य भी काफी समय से नहीं हुआ. इस बयान के बाद कलेक्टर ने भी अब सभी जिम्मेदारों को आड़े हाथों लेने का मन बना लिया है. यह देखना दिलचस्प होगा कि गाज किस किस पर गिरती है ?

लापरवाही की सारी हदें पार....

जबलपुर कैंट विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत रांझी सर्रा पीपर, नगर निगम जोन क्रमांक 10 में संवेदनहीनता का ऐसा मामला सामने आया जिसने लापरवाही की सारी हदें पार कर दीं. मामला रांझी सर्रा पीपर निवासी विजय श्रीवास्तव की मां की तेरहवीं कार्यक्रम से जुड़ा है जहां परिजनों ने तेरहवीं कार्यक्रम के लिए सामुदायिक भवन बुक कराया और बकायदा निर्धारित शुल्क नगर निगम में जमा करा दिया, लेकिन तेरहवीं कार्यक्रम वाले दिन परिजन सामुदायिक भवन की चाबी के लिए नगर निगम कार्यालय, क्षेत्रीय पार्षद और सुपरवाइजर के चक्कर काटते रहे मगर उन्हें चाबी नहीं मिली. अंतत: परेशान, हताश परिजनों ने बीच सड़क पर टेंट लगाकर जैसे तैसे तेरहवीं कार्यक्रम पूरा कराया.

ब्लैक लिस्टेड हो गए सम्मानित...?

सेठ गोविंददास जिला चिकित्सालय (विक्टोरिया) एक बार फिर से सुर्खियों में आ गया है. इस बार जो वजह सामने आई है वो काफी चौंकाने वाली रही है. चर्चा है कि जिसे ब्लैक लिस्ट में डालना था उन्हें ही खुश करने प्रशस्ति पत्र बांट दिए गए. सबसे ज्यादा किरकिरी तो तब हुई जब विक्टोरिया के साइकिल स्टैण्ड का ठेका लेने वाले से लेकर सिक्योरिटी ठेका कंपनी के कर्मचारियों तक को रेवड़ी के जैसे प्रशस्ति पत्र बांटे गए. मौका था गणतंत्र दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का. ऐसे लोगों को प्रशस्ति पत्र मिलता देख वाकई में ईमानदारी से काम करने वाले कर्मचारियों में खासा आक्रोश भी नजर आया और वह ये कहते हुए नजर आए कि जी हुजूरी करने वालों की ही आज के समय कीमत है, काम करने वालों की नहीं. वहीं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित होने वाले नामों की सूची बनाने वालों की योग्यता पर भी सवाल खड़े हो रहे हैं, वह इसलिए क्योंकि सवालों के घेरे में रहे नामों को लेकर कई महीनों से विक्टोरिया में बात चल रही थी कि किसको ब्लैक लिस्ट करना है और किसको नहीं. हैरानी की बात तो ये थी कि इस सम्मान वाली सूची में उन लोगों के नाम गायब थे जो लंबे समय से न केवल विक्टोरिया अस्पताल में रीढ़ की हड्डी की तरह जुटे हुए हैं, बल्कि कोरोना काल में अपनी चिंता किये बिना योद्धा की तरह डटे रहे. फिलहाल अस्पताल में आलम ये है कि इस गंभीर मसले पर व्यवस्थाएं सुधारने की बजाय आपसी खींचतान जमकर मची हुई है और उसका नुकसान मरीजों का हो रहा है.

सोशल मीडिया के दुष्प्रभाव से कैसे बचें?

बच्चों व किशोरों में डिजिटल एडिक्शन बढ़ता जा रहा है, जिसका मानसिक स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ता है. अभिभावकों, शिक्षकों तथा मीड़या प्लेटफार्म की जिम्मेदारी है कि मोबाइल व लैपटॉप स्क्रीन तथा वास्तविक दुनिया के बीच संतुलन बनाए रखें. विभिन्न डिजिटल प्लेटफार्म से उपलब्ध होने वाली विविधतापूर्ण कंटेंट में युवा इतने खो जाते हैं कि उन्हें समय का भान ही नहीं रहता. यह बढ़ता हुआ स्क्रीन टाइम उनके अध्ययन, नींद तथा प्रत्यक्ष सामाजिक संपर्क में बाधक होता है. सोशल मीडिया की हर क्षेत्र में गहरी पैठ हो गई है चाहे सौंदर्य संबंधी मानदंड हों या करिअर से संबंधित जानकारी, युवा उस आभासी दुनिया में व्यस्त हो जाते हैं. उसी के आधार पर वह स्वयं का व दूसरों का मूल्यांकन करने लगते हैं. उनकी एकाग्रता पर बुरा असर पड़ता है, बेचैनी बढ़ जाती है तथा वह घंटों स्क्रीन से चिपके रहना पसंद करते हैं. आज की शिक्षा प्रणाली में मीडिया लिट्रेसी या माध्यम साक्षरता अनिवार्य हो गई है, लेकिन इसका इस्तेमाल सृजनात्मकता, विश्लेषणात्मक चिंतन और नवोन्मेष के लिए होना चाहिए. सोशल मीडिया की सार्थकता इसमें है कि वह सही जीवनशैली, जीवन मूल्यों व नैतिकता की ओर ले जाए. इसके लिए सोशल मीडिया प्लेटफार्म की जिम्मेदारी तय करनी होगी. युवा उपयोगकर्ताओं के लिए स्पष्ट तथा उनके आयु समूह के अनुसार कठोर मार्गदर्शक नियम तय करने होंगे. इसके लिए नियमित एजुकेशन तथा अभिभावकों के नियंत्रण की जरूरत पड़ेगी. रेगुलेटर्स से भी सहयोग लेना पड़ेगा ताकि वह सही कंटेंट दें. यह बेहद जरूरी हो गया है कि युवा वर्ग वास्तविक जगत की गतिविधियों जैसे कि खेल व पुस्तक अध्ययन में रुचि ले. बाहरी कार्यकलापों में संलग्नता से युवाओं में आपसी सहयोग, समस्याओं व चुनौतियों को हल करने, निर्णय क्षमता को बढ़ाने में मदद मिलती है तथा उनका रवैया रचनात्मक बनता है. द्व विचारों के प्रत्यक्ष आदान-प्रदान से वह अपनी क्षमता व शक्ति पहचानने लगते हैं जिससे वह जीवन में सफलता हासिल कर सकें. सोशल मीडिया को समाप्त नहीं किया जा सकता लेकिन उसके दुष्प्रभावों को नियंत्रित किया जा सकता है. ऐसा होने पर युवा अपने लिए जरूरी हुनर को हासिल करने की दिशा में प्रवृत्त होंगे.

निशानेबाज

27 रुपये रोज पर जी रहा किसान क्या उस पर है किसी का ध्यान

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, हमारे देश का अन्नदाता और वस्त्रदाता किसान गरीबी और कर्ज के दलदल में बुरी तरह फंसा हुआ है. राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) के मुताबिक विशुद्ध कृषि आय को देखा जाए तो भारतीय किसान केवल 27 रुपये रोज पर गुजारा कर रहा है.'

हमने कहा, 'यह मत भूलिए कि प्रधानमंत्री मोदी ने किसानों के लिए 6,000 रुपये साल की मदद दे रखी है. पूर्व प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री ने देशवासियों को 'जय जवान, जय किसान' का नारा दिया था. इससे प्रभावित होकर मनोज कुमार ने खेती-किसानी पर 'उपकार' नामक फिल्म बनाई थी, जिसका गीत था- मेरे देश की धरती सोना उगले, उगले हीरे मोती! शास्त्री के नारे में पूर्व प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी ने पुछल्ला लगाकर उसे जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान बना दिया था. पुरानी फिल्में देखिए जिनमें किसान हल चलाते हैं, नाचते-गाते हैं और तुरंत उनके खेत में फसल लहलहाने लगती है. उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद ने किसानों-मजदूरों पर बहुत सी कहानियां लिखी हैं. इस तरह किसानों को पर्याप्त महत्व दिया गया है.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, वास्तविकता यह है कि वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने भी किसानों पर ध्यान नहीं दिया. बजट में कृषि क्षेत्र के लिए सिर्फ 7 प्रतिशत की बढ़ोतरी की गई है जो रुपये की गिरावट और महंगाई की मार में ही खप जाएगी. किसानों की आय घटने के कारणों को सुधारने की बजट में कोशिश नहीं की गई. किसान कर्ज में पैदा होता है और कर्ज में ही मरता है. महाराष्ट्र और खासकर विदर्भमें हजारों किसानों ने कर्ज के बोझ और अपमानजनक तकाजे से तंग आकर आत्महत्या की है. जब वे कठोर परिश्रम से अच्छी पैदावार करते हैं तो फसलों का उचित दाम नहीं मिलता. टमाटर और प्याज सड़क पर फेंकने की नौबत आ जाती है. आपको याद होगा कि दिल्ली में किसान आंदोलन कितनी बेदर्दी से कुचला गया था.'

हमने कहा, 'यदि भारत-अमेरिका व्यापार समझौते में भारत का कृषि क्षेत्र अमेरिका के लिए खोल दिया गया तो अपने किसान और बर्बाद हो जाएंगे. ट्रंप अपना सस्ता कॉर्न (मक्का) और डेयरी प्रॉडक्ट भारत में खपाएंगे. अमेरिका में किसानों को भारी सब्सिडी दी जाती है ताकि वह खेती करना छोड़कर नौकरी करने शहरों में न आ जाएं. इसके विपरीत हमारा किसान भगवान भरोसे है.'

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12163
- डॉ. सागर खादीवाला

1	2	3	4		5	■	6
7				■	8		
	■	9				■	
■	10			■	■	11	
12		■		■	13		
14			■	15		■	
16		■	17			18	■
■		■	19		■	20	

बाएं से दाएं
1. जनहित के लिए संघर्षरत प्रसिद्ध महिला 7. सूर्य, रवि, अरुण (सं.) 8. आदर सहित 9. एक बड़ा फल जिसकी सब्जी और अचार बनाया जाता है 10. लाड़ला 11. नक्षत्र, सितारा 12. पीड़ित, ग्रस्त, जिस पर मार पड़ी हो 13. कारण (उर्दू) 14. निर्माण, सृजन, साहित्यिक कृति 15. ब्याज 16. हाथ, किरण (सं.) 17. नमीयुक्त, भीगा (उर्दू) 19. लक्ष्मी 20. शराब, मद्य (सं.)

ऊपर से नीचे
1. पृथ्वी, वसुधा (सं.) 2. शालि जिसमें से चावल निकलता है 3. खाना बनाने की कला 4. लगातार व्यर्थ की बातें करना 5. आम (सं.) 6. चरमराने की आवाज, चरमर ध्वनि 10. बुरा व्यवहार, असभ्य आचरण 11. मुकुट (उर्दू) 12. प्रतिकारक, मार डालने वाला (सं.) 13. मुंह, चेहरा (सं.) 15. शूर, योद्धा 17. नगर, गांव 18. बहुत बड़ा, सर्वश्रेष्ठ, अत्यधिक (सं.)

Solution 12162

आ	ली	शा	न	■	चं	गु	ल
म	द	न	■	वे	द	ना	■
ड़ा	■	दा	स	ता	■	ह	म
■	ति	र	पा	ल	■	गा	दी
खा	रा	■	ट	■	झ	र	ना
न	हा	ना	■	मा	ल	■	■
दा	■	का	पा	लि	क	■	पा
न	र	म	■	क	ना	ग	त

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में सामाजिक कार्यों में संलग्नता रहेगी, व्यवसाय में वृद्धि होगी, राजनैतिक लाभ होगा, वर्ष के मध्य में व्यवसाय की स्थिति में सुधार होगा, आय के अन्य स्त्रोतों में वृद्धि होगी, पूर्व परिचित से भेंट होगी, सफ्लता मिलेगी, मन प्रसन्न रहेगा, वर्ष के अन्त में अनावश्यक विवाद से मन खिन्न रह सकता है, स्थान परिवर्तन का योग है.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों के व्यवसाय में वृद्धि होगी, राजनैतिक लाभ प्राप्त होगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को पूर्व परिचित कार्यो में सफ्लता के योग हैं, कर्क राशि के व्यक्तियों को मनोनुकूल सफ्लता प्राप्त होने का संकेत है, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को अधिक परिश्रम होगा, यात्रा में कष्ट होगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को स्थान परिवर्तन का योग है, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों का अनावश्यक विवादों से मन द्रवित रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, दुबला पतला, लम्बे कद का होगा. शिक्षा उत्तम रहेगी. लेखन, अध्ययन में इनकी रूचि रहेगी. पारिवारिक दायित्वों के प्रति इनका लगाव रहेगा. माता पिता के प्रति आस्थावान रहेगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

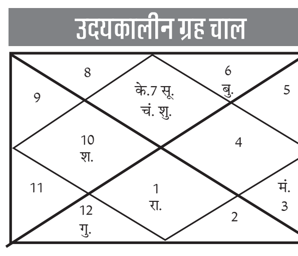

पंचांग

रा.मि. 17 संवत् 2082 फाल्गुन कृष्ण पंचमीं भृगुवासरे रात 2/27, हस्त नक्षत्रे रात 1/42, धृति योगे रात 1/7, कौलव करणे सू.उ. 6/31, सू.अ. 5/29, चन्द्रचार कन्या, शु.रा. 6,8,9,12,1,4 अ.रा. 7,10,11,2,3,5 शुभांक- 8,0,5.

व्यापार भविष्य

फाल्गुन कृष्ण पंचमीं को हस्त नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी गुड, खांड, तांबा, धातु, रूई, कपास, सन, हैसियन, जीरा, धनिया एवं किराने की वस्तुओं में नरमीं का रूख रहेगा. सरसों, अरंडी, घी के भाव में तेजी होगी. भाग्यांक 1409 है.

मेष- नए सौदे कारोबारी विस्तार में सहायक रहेंगे. किसी उत्सव एवं मांगलिक कार्यों में शामिल होना पड़ेगा. मनोरंजन के अवसर मिलेंगे.

वृषभ- संतान के केरिअर की चिंता रहेगी. अधिकारी वर्ग नाराज हो सकते हैं. मित्रता उपयोगी सिद्ध होगी. नवीन योजनाओं का क्रियान्वयन होगा.

मिथुन- जो आप जो चाहते हैं वैसा हो पाना मुश्किल है. पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति होगी. नवीन योजनाओं एवं कार्यों मे उत्साह बना रहेगा.

कर्क- पारिवारिक विवाद का सामना हो सकता है. माता पिता के प्रति सहयोग से आवश्यक जिम्मेदारी पूरी होगी. मांगलिक कार्य बनने का प्रबलीयोग है.

सिंह- साझेदारी में नया कार्य शुरू कर सकते हैं, जिसे चाहते हैं उसे दिन की बात कह दें. शिक्षा के प्रति लगन एवं उत्साह बना रहेगा. संतान के कार्यों में खर्च होगा.

कन्या- जरूरी कार्य पहिले करें, ऐसी सुविधा बार-बार नहीं मिलेगी. अज्ञात भय एवं चिंता दूर होगी. विरोधी पक्ष के कारण थोड़ी परेशनी होगी. अचानक लाभ होगा.

तुला- कार्यक्षेत्र में चुनौतियों का डट कर मुकाबला करेंगे. पारिवारिक जीवन आनंदमय रहेगा. यश प्राप्त होगा. निकटस्थ अधिकारी मदद करेंगे.

वृश्चिक- राजकीय मामले हल होने की उम्मीद है. आकस्मिक यात्रा होगी. पारिवारिक जवाबदारी रहेगी. मान सम्मान मिलेगा. बने बनाये कार्य में व्यवधान आ सकता है.

धनु- धार्मिक कार्यक्रमों में शामिल होने से शांति मिलेगी. प्रियजनों से उपहार मिलेगा. दूसरों के मामले से दूर रहें. धार्मिक कार्यों में यश एवं सम्मान मिलेगा.

मकर- भूमि भवन वाहन के कार्यों में खर्च होगा. नई मित्रता उपयोगी रहेगी. नौकरी से संबंधित शुभ समाचार मिलेगा. मानसिक प्रसन्नता रहेगी. यश मिलेगा.

कुम्भ- सामाजिक कार्यक्रमों में आप आकर्षण का केन्द्र बन सकते हैं. कार्यों में मनोवांछित सफ्लता प्राप्त होगी. मानसिक प्रसन्नता बनी रहेगी. लाभ मिलेगा.

मीन- नकारात्मक चिंतन से मेहनत पर पानी फिर सकता है. भौतिक सुख सुविधाओं की वृद्धि होगी. नये अनुबंधों पर विचार विमर्श होगा. अतिथि आगमन होगा.

SUDOKU 7295

7	4	6		1		8		2
	5		8		7			
9				6				
	6		7	9		5		3
5				4				1
3		1		8	2		7	
				5				6
			4		3		9	
4		3		2		1	5	7

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7294

8	7	9	4	2	5	6	1	3
5	6	3	8	1	7	4	2	9
4	1	2	6	9	3	5	8	7
1	9	8	3	7	4	2	6	5
7	3	4	2	5	6	8	9	1
2	5	6	1	8	9	7	3	4
9	8	5	7	3	2	1	4	6
6	2	7	9	4	1	3	5	8
3	4	1	5	6	8	9	7	2